REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

वाल्मीकि रामायण में जातक विचार

डॉ. वेदप्रकाश मिश्र[1] , गणेश प्रसाद तिवारी[2]
[1]प्रोफेसर कला संकायध्यक्ष , संस्कृत विभाग , डॉ.सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा, बिलासपुर.
[2]एम.फिल्. (संस्कृत) , डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय, करगी रोड, कोटा, बिलासपुर.

सारांश–

राम सम्बन्धी काव्यों की एक निशद श्रृंखला इस देश में दृष्टिगत होती है। 'रामायण सहकोटि अपातः ज्वरित रघुनाथस्य सहकोटि प्रतिवस्तटम्' इत्यादि कथन रामकाव्यों की व्यापकता की ओर इंगित करते हैं। विभिन्न भाषाओं का आश्रय लेकर रामकाव्यों का प्रणयन हुआ और अनेक प्रबन्धों के अविच्छिन्न अंग के रूप में भी रामवत्त का उपनिबन्धन किया गया। रामवृत्त को अंग अथवा अंगी बनाकर प्रणीत प्रबन्धों की श्रृंखला की पहली कड़ी और सर्वोत्तम निर्मित होने का गौरव महर्षि बाल्मीकि के इस विशाल महाकाव्य को प्राप्त हुआ। रामायण राम के उदार चरित्रों के निरूपण के साथ–साथ भारतीय चिन्तन के विभिन्न पक्षों की तथ्यात्मक प्रस्तुति भी करता है। वेद के प्रायः सभी अंगो और उद्योगों की चर्चा इस ग्रन्थ में की गयी है, जिनमें ज्योतिष भी वर्णन में अनुस्यूत रहा है। ज्योतिष के जातक स्कन्धीय तथ्यों पर बाल्मीकि मुनि के दृष्टिकोण का यहाँ समीक्षण किया जा रहा है।

जातक विचार वैदिक चिन्तन का पूरक और उपकारक यह शास्त्र वेद का नेत्र स्थानीय एवं सर्वतोवरिष्ठ गरिमा का सहज अधिकारी है। सिद्धान्तशिरोमणिकार ने कहा भी है –

वेदचक्षुः किलेदं स्मृतं ज्योतिषं
मुख्यता चांगमध्येऽस्म तेनोच्यते।।[1]

ज्योतिष शास्त्र सूर्य आदि ग्रहों तथा अन्य ज्योतिष्पिण्डों की गति, स्थिति, संस्कृति आदि के माध्यम से शुभाशुभ फलों का ज्ञापक होता है। प्राणि समुदाय की राशि, लग्नादि से सम्बद्ध ग्रह चक्षचादि के प्रभाव का गहन अध्ययन कर उसके अनुसार शुभाशुभ परिणामों की पूर्ण सूचना देना ही ज्योतिष का व्यावहारिक उद्देश्य है। इसी कारण इस शास्त्र को आदेश या दिव्यांश भी कहा जाता है। जैसा कि भास्कराचार्य का कथन है –

ज्योतिः शास्त्रफलं पुराणगणकैसदेशं इत्युच्यते।।[2]

यह काल गणना आदि का व्यवस्थापक होने से कालविधान शास्त्र भी कहा गया है –

''तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो जयोतिषं वेद स वेद यज्ञान्[3]**।**

ज्योतिषशास्त्र की अवयवात्मक परिकल्पना करते हुए आचार्यों इसे त्रिस्कन्ध (तीन स्कनधों वाला) भी बतलाया है। जैसा कि :–

ज्योति शास्त्रभनेक भेदविभयं स्कन्धग्याधिफलम।।[4]

तीन स्कन्धों के माध्यम से यह शास्त्र अपने समय वर्ण्य को भलीभाँति प्रस्तुत करता है। नारद संहिताकार कहते हैं :–

सिद्धान्त संहिता होरा रूपस्कन्धत्रयात्यकम्।
वेदस्य निर्मतं चक्षुः ज्योतिः शास्त्रमनुत्तमम्।।[5]

इन तीनों स्कन्धों में परिगणित 'होरास्कन्ध' ही 'जातकस्कन्ध' भी कहलाता है। जैसा कि सारावलीकार ने कहा है –

जातक मिति प्रसिद्धं यल्लोके तदिह कीर्त्यते होरा।
अथवा दैवविमशंनपर्यायः खल्वमं शब्दः।।[6]

इस प्रकार जातक ही होरा शास्त्र है, ऐसा स्पष्टः सिद्ध है। उसकी प्रकृति को इस प्रकार से जानना चाहिये– ''जन्मकालिकग्रह– नयजादि की स्थिति को आधार बनाकर जो साधन अतीत, वर्तमान एवं भावी जीवन के शुभाशुभ फलों को बतलाये, उसे जातक शास्त्र कहते हैं। कल्याण वर्मा ने इसके प्रयोजन का निरूपण करते हुए लिखा है–

अर्थार्जनं सहायः पुरूषाणांमापदर्णणे पोतः।
यात्रासभये मन्त्री जातक सपहाय नीस्त्यपरः।।[7]

यह शास्त्र अर्थोपार्जन का प्रशस्त साधन है। आपत्ति सागर में डूबते हुए पुरूषों की नाव और किसी भी कार्य का आरम्भ करते समय श्रेष्ठ परामर्श देने वाला मन्त्री है।

वाल्मीकि रामायण में जातकशास्त्रीय तत्व विभिन्न प्रसंगों में प्राप्त होते है। सभी कार्य की सिद्धी–असिद्धि अथवा विलम्ब से सिद्धि की सूचना ज्योतिष शास्त्र के द्वारा निरूपित मुहूर्तों में समाविष्ट है। रामायणकार स्थान–स्थान पर मुहूर्त विज्ञान को महत्व देते है। महर्षि वाल्मीकि ने प्रसंगानुरूप विविध मुहूर्तों का वर्णन किया है, और अस्फुट रूप से तो वे प्रायः प्रत्येक सर्ग में किसी न किसी बहाने ज्योतिष के तथ्यों का विमर्शन करते हुए दृष्टिगत होते हैं। उनका मुहूर्त सम्बन्धी चिन्तन आज भी, पारम्परिक ज्योतिर्विदों को यथावत् मान्य है। जैसे प्रजापति भगसे उपलक्षित उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र वैवाहिक नक्षत्रों में सर्वाधिक प्रशस्त है। श्रीराम आदि चारों भाईयों का परिणय सीता आदि राजपुत्रियों के साथ एक ही नक्षत्र में हुआ था। जैसा कि रामायण में वर्णित है –

एकाहना राजपुत्रीणां चतसृणां महामुने।
पाणीत् गृहणन्तु चत्वारो राजपुत्रा महाबलाः।।
उत्तरे दिवसे ब्रहम्न् फल्गुनीभ्यां मनीषिणः।
वैवाहिकं प्रशंसन्ति भगो यत्र प्रजापतिः।।[8]

ऐसे ही महाराज दशरथ राम के राज्याभिषे कार्य चयन किये गये मुहूर्त की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं –

अद्य चन्दोऽभ्युपगत् पुष्यात् पूर्वं पुनर्वसुम्।
श्वः पुण्ययोगं नियतं वक्ष्यन्ते दैवचिन्तकाः।।
तत्र पुण्येऽभिविचस्व मनस्त्वरयतीव माम्।
श्वहत्वाहमभिषेक्ष्यामि यौवराज्ये परन्तप।।[9]

रामायणकार कतिपय स्थलो पर शब्द अथवा संकेत से इस बात को प्रत्यायित कराते हैं कि समस्त लोक व्यवहार का ज्योतिषी के आदेश से प्रवर्तित होना उचित है। दशरथ के अश्व मेघयज्ञ का जब उपक्रम हो रहा था, तब उसके व्यवस्था सम्पादक मण्डल में ज्योतिषी भी परिगणित हुआ–

गणकान् शिल्पिनश्चैव तथैवनट–नर्तकान्।।[10]

वाल्मीकि काल शुद्धि की महत्ता का भी प्रतिपादन स्थान–स्थान पर करते ज्ञात होते हैं। वे पर्याप्त समय तक प्रतीक्षा करके मुहूर्त आने पर कार्योद्यत होते हैं। जैसा कि रामायण में –

ततः काले बहुतिथे कस्मिंश्चित् सुमनोहरे।
वसन्ते समनु प्राप्ते राज्ञे यष्टुं मनोऽभवत्।।[11]

वाल्मीकि ने रामायण में दशरथ के मुख से उनकी मृत्यु या आपत्तियों की संभावनावाली ग्रह स्थिति का भी वर्णन करवाया है। वह अत्यन्त वस्तुनिष्ठ एवं विशेष अवधेय है। तदनुसार यदि राजा के जन्म नक्षत्र को सूर्य, मंगल तथा राहु नामक पापग्रह आक्रान्त कर लें वो शीघ्र ही मरण अथवा महानिपत्ति को प्राप्त करता है।

जिस समय दशरथ राम का राज्याभिषेक करना चाह रहे थे, उस समय वैसी ही ग्रहस्थिति से उनका जन्म–नक्षत्र प्रभावित था। जैसा कि रामायण में वर्णित है –

अवस्तब्धं च मे राम नक्षत्रं दारूणग्रहैः।
आवेदयन्ति दैवज्ञाः सूर्यागारकराहु भिः।।
प्रायेण न निमित्रानामी दृशानां समुइभवे।
राजाहि मृत्युमाप्नोति घोरां चापदमृच्छति।।[12]

भगवान् श्रीराम की जन्मालिक ग्रहस्थिति का रामायणकार ने सुस्पष्ट रूपेण किया है। यद्यपि यह अत्यंत संक्षिप्त है, जिसे बहिरंग साधानों के माध्यम से ही समझा जा सकता है। ग्रहस्थिति के अनुरूप राम के जीवन का संघर्षमय किन्तु महोज्जवंत स्वरूप अतिपन्न हुआ, जिसका यह लोक स्वयं ही साक्षी है। रामायणकार लिखते हैं कि –

ततो यज्ञे समाप्ते तु ऋतूनां षट् समत्ययुः।
ततश्च द्वादशे मासे चैत्रे नावमिके तिथौ।
नयत्रेऽदिति दैवत्ये स्वोच्च संस्थेषु प□चसु।
प्रोद्यमाने जगन्नाथं सर्वलोकनमस्कृतम्।
कोसल्याजनयद् रामं दिव्यलक्षण संयुतम्।।[13]

पुत्रेष्टि यज्ञ की समाप्ति उपरान्त लगभग बारह मास बीतने पर चैत्र शुक्ल नवमी के दिन पुनर्वसु नक्षत्र तथा कर्क लग्न में जब पाँच ग्रह अपनी–अपनी उच्च दशा में स्थित थे, उस समय कौसल्याने लोकवन्दित श्रीराम को जन्म दिया। पाँच ग्रह कौन–से थे, यद्यपि इस विषय में रामायणकार मौन हैं, तथापित वर्णना की व्यंजना एवं अन्य स्त्रातों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि राम के जन्म के समय सूर्य, मंगल, बृहस्पति, शुक्र तथा शनि अपनी उच्चावस्था में थे। उस समय सूर्य मेष में, मंगल मकर में, बृहस्पति कर्क में, शुक्र मीन में तथा शनि तुला में विद्यमान थे।

उच्च दशा में स्थित इन पाँचों ग्रहों का स्पष्ट प्रभाव राम की राजनीतिक जीवन पर पड़ा। आज भी उनकी विशिष्ट शासन पद्धति की तुलना किसी भी श्रेष्ण राज्य शासन से की जाती है। ''रामराज्य'' श्रेष्ठ शासन का अन्यतम उपमान माना जाता इसका (यद्यपिप्रकट कारण श्रीराम की भमवत्ता है तथापि) प्रकट कारण ज्योतिषीय ग्रहस्थिति को मानना अनुचित न होगा। राम के जन्मचक्र में मंगल का उच्चस्थ होना उनकी शत्रु

विजय साथ–साथ दाम्पत्य जीवन के कष्टों का भी कारण बना। ऐसे ही बृहस्पति की उच्चता ने उन्हें असाधारण धर्मनिष्ठा प्रदान तथा शनि की उच्चता के कारण वे दीर्घ जीवी हुए। रामायणकार उनके आयुष्य के विषय में लिखते हैं –

दशनषंसहस्राणि दशवर्ष शतानि च।
रामो राज्यमुपासित्वा ब्रहमलोकं प्रयास्यति।।[14]

राम लगभग ग्यारह हजार वर्षों तक शासन करने के उपरांत स्वधाम गमन किया। शुक्र की उच्यता के कारण उन्हें विपुल भोग वैभव और सूर्य की उच्चता के कारण लोकोत्तर वर्चस्व की प्राप्ति हुई। बाल्मीकि के अनुसार भरत पुष्प नक्षत्र तथा मौन लग्न में जनमें थे और दोनों सुमित्रा पुत्र आश्लेषा नक्षत्र एवं कर्क लग्न में उत्पन्न हुए। जैसा कि रामायण में–

पुष्पे जातस्तु भरतो मीन लग्ने प्रसन्नधीः।
सार्पे जावै तु सौमित्री कुलीरेऽभ्युदिते रवौ।।[15]

इस प्रकार हम देखते है कि बाल्मीकि मुनि ने रामायण काव्य में जातक सम्बन्धी तत्वों–तथ्यों को कहीं कष्ठतः तो कहीं व्यंजना से निरूपित किया है। इन रामायणीय ज्योतिष शास्त्रीय तथ्यों की शुभाशुभ फल निरूपण की दृष्टि से आज भी प्रासंगिकता उत्पन्न है।

सन्दर्भ–

1. सिद्धन्त शिरोमणी, गणिता. मध्य. काल. 11 श्लोक
2. सि.सि. मोला. गोल प्र. 6 श्लोक
3. सि.सि. मोला. गोल प्र. 9 श्लोक
4. बृहत्संहिता 1/9
5. नारद संहिता 1/4
6. सारावली 2/4
7. सारावली 2/5
8. वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड 72/12, 13
9. वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड 4/21–22
10. वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड 13/7
11. वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड 12/1
12. वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड 4/18, 19
13. वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड 18/8–10
14. वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड 1/97
15. वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड 18/15

LBP PUBLICATION